काशी विद्यापीठ

वाराणसी

नाम _____

कक्षा _____ वर्ग _____

विद्यालय _____

निर्माता—
गुप्ता पेपर हाउस
कर्णघंटा, वाराणसी

पेज ८० W. C.
१२० W. C.

५)
५७)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

22-12-94

श्री गणेशाय नमः 19-94 -

स्वामी करपात्री जी महाराज के जीवन चरित्र उपासना और चमत्कार नाम की पुस्तक लिख रहे हैं स्वामी जी के विषय में उनसे संबंधित समाचार कथन विशेषताएं साधना, उपासना, रिद्धी, तथा चमत्कार, के विषय में आप को जो भी जानकारी हो लिख कर भेजने की कृपा करें आप के नाम से ही छपेगा।

पत्र भेजें - ① निश्चलानन्द सरस्वती ब्रह्मचारी, ② अयोध्या के लक्ष्मण किलाधीश, ③ आनन्द चैतन्य ④ अच्युतानन्द तीर्थ, ⑤ स्वरूपानन्द सरस्वती, ⑥ श्री बाबा मथुरा वाले, ⑦ शिव चैतन्य ब्रह्मचारी जी, ⑧ स्वामी पशुपति नाथ बाबा, ⑨ सती शास्त्री स्वामी, ⑩ जगदीश चैतन्य ब्रह्मचारी, - ⑪ सीताराम खेमका, ⑫ राधेश्याम खेमका, ⑬ हनुमान प्रसाद पोद्दार, ⑭ पुरुषोत्तम पोद्दार, ⑮ मुलतानी जी, ⑯

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी की पंचकोशी यात्रा के

काशी की पंचकोशी यात्रा करने वाले नर-नारियों के जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट होते हैं तथा काशी की पंच-कोशी यात्रा करने वाले मनुष्यों के संकट विघ्न दरिद्रादि दूर हो जाते हैं। काशी दर्शन, काशी गौरव में प्रमाण सहित छपा है।

काशी की पंचकोशी यात्रा कहाँ से कैसे प्रारंभ होती है :-

प्रातः गंगा जी में स्नान करके संध्या तर्पणादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर विश्वनाथ नित्य यात्रा करने के पश्चात ढुण्ढी राज (गणेश) अन्नपूर्णा दण्डपाणी और तत्पश्चात विश्वनाथ जी का दर्शन करके काशी की पंचकोशी यात्रा जाने के लिये प्रार्थना करके, ज्ञानवापी से संकल्प करके मणिकर्णिका घाट में जाते हैं।

मणिकर्णिका घाट में स्नान या मार्जन करके मणिकर्णिकेश्वर सिद्धि विनायक का दर्शन कर मणि-कर्णिका घाट से दक्षिण हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन करते हुये तथा लट्ठक के मन्दिर में दर्शन-पूजन करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी की पंचकोशी यात्रा के संबंध में

—•—

काशी की पंचकोशी यात्रा करने वाले नर-नारियों के जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट होते हैं तथा काशी की पंचकोशी यात्रा करने वाले मनुष्यों के संकट विघ्न दरिद्रादि दूर हो जाते हैं। काशी दर्शन काशी गौरव में प्रमाण सहित दिया है।

काशी की पंचक्रोशी यात्रा कहाँ से करें प्रारंभ होती है :-

प्रातः गंगा जी में स्नान करके संध्या तर्पण आदि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर विश्वनाथ नित्य यात्रा जरूर करें पश्चात ढुण्ढी राज (गणेश) अन्नपूर्णा दण्डपाणी और तत्पश्चात विश्वनाथ जी का दर्शन करके काशी की पंचक्रोशी यात्रा लाभ के लिये प्रार्थना करके, ज्ञानवापी से संकल्प करके मणिकर्णिका घाट में जाते हैं।

मणिकर्णिका घाट में स्नान या मार्जन करके मणिकर्णिकेश्वर सिद्धि विनायक का दर्शन कर मणिकर्णिका घाट से दक्षिण हर-हर महादेव शम्भो- काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन करते हुये तथा प्रत्येक मन्दिर में दर्शन-पूजन करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३ ४ १ २ ५
३ चलते है।

नोट- जो यात्री गंगातट से चलने में असमर्थ है वे मणिकर्णिका घाट से नाव में जाते है तथा प्रत्येक मन्दिर के सामने से "गंगा केशवाय नमः, ललिता देव्यै नमः, जरासन्धेश्वराय नमः, सोमनाथेश्वराय नमः, दात्तूमेश्वराय नमः, दुलहेश्वराय नमः, आदिवाराहेश्वराय नमः, बटुक देव्यै नमः, दशाश्वमेधेश्वराय नमः, सर्वेश्वराय नमः, केदारेश्वराय नमः, हनुमत्येश्वराय नमः, अर्कविनायकाय नमः, लोलार्क सूर्याय नमः, असीतीर्थाय नमः" इत्यादि का उच्चारण करते चले।

असी घाट में नाव से उतर कर गंगा जी में मार्जन करके गंगाजल साथ में लेकर चले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ चलते हैं।

नोट- ॐ यात्री गंगातट से चलते में असमर्थ हैं वे मणिकर्णिका घाट से नाव में जाते हैं तथा प्रत्येक मन्दिर के सामने से "गंगा केदाराय नमः, ललिता देव्यै नमः, अन्नपूर्णेश्वराय नमः, सोमनाथेश्वराय नमः, दात्रेश्वराय नमः, दुःखहरेश्वराय नमः, आदिवाराहेश्वराय नमः, वृद्धादित्यनमः, दशाश्वमेधेश्वराय नमः, सर्वेश्वराय नमः, केदारेश्वराय नमः, दुर्गतेश्वराय नमः, अविमुक्तेश्वराय नमः, लोलार्क सूर्याय नमः, ओंकारतीर्थाय नमः" देवादि को उच्चारण करते चलें।

अस्सी घाट में नाव से उतर कर गंगा जी में मार्जित, करके गंगाजल साथ में लेकर चलें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

ए

जन्मान्तर सहस्रेषु यत्पापं पूर्व-
सञ्चितम्

अनेक जन्मों के अर्जित पाप तब
तक गरजते हैं, जब तक भव
विहारिनी काशी का दर्शन
नहीं होता काशी के दर्शन होतेही
सभी पाप शान्त होजाते है।
हजारों जन्मों के ~~पापसञ्चित~~
पाप काशी में प्रवेश करते
ही नष्ट होजाते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी तिलोत्तमा की सेवारी है।

काशी जन्म मृत्यु रूपी चक्कर से छुड़ाती है।

काशी - काशी वास करने वाले को मौज - वस्त्र, आवास देती है।

काशी काशी वासियों को मुक्ति मुक्ति देती है।

जो कुछ निश्चय करके काशी वास करते है।

~~काशी वास करते है~~, उन को काशी सुख संपत्ति देकर सुखी बनाती है।

काशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी में निर्दुग्गादेवी
के भक्त को विरक्तागति
अनायास मुक्ति प्राप्त होती है
जो नर, नारि विष्णु और
शिव होकर, जिसे भेद
मानते है शिव या विष्णु
भगवान का निन्दा
करते है वे नरक में जाते
है राजा घोर, नरक में
पड़ते है। शिवस्य विष्णु
विष्णुस्य। शिव कहा गया
है

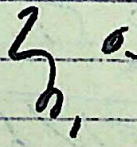

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमि०

शिवशंकर चौबे क० मि०

फारबी १२ वर्ष तक यात्रा करते समय में किसी भी यात्रा में कहीं, किसी के घर पर में किसी के मिताहिंगा और किसी यात्रा में भी कोई विघ्न नहीं हुआ और कोई भी यात्री बिमार नहीं हुये। स्वामी जी आगे-आगे चलते थे, हमलोग पीछे-पीछे चलते काशी, मूलगी, ब्रांकि, सुरथ आदि देशों में मुसलमानों के मुहल्ले में स्वामी जी के कृपा से बिना दर्द सहते थे मुसलमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी स्नान की दृष्टि से
पतितपावनी गङ्गा रहती है और
सरयू अर्थात् घाघरा
स्नान के दृष्टि से
काशी की गङ्गा बराबर है।

प्रत्येक रविवार, सोमवार,
और त्रयोदशी के दिन काशी की
पञ्चक्रोशी अर्थात् इत्यादि
यात्रा प्रारम्भ होती है।
ऊँचे ऊँचे काशी के
गलियों में पानी से धोया जाता
था गली बहुत साफ रहती
थी और गङ्गा के किनारे
के मकान दर्शनीय थे
मिर्जापुर की गङ्गा के
शोभा बढ़ाते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहन्ता लोग पैर छोड़ दो
तो हम लोग मना करते थे
स्वामीजी का शरीर भी रक्तवर्ण
(दोनों के रङ्ग के है निशान कांता

भस्म के
त्रिपुण्ड लगा करता है
अंगैर शरीर में १२ जगह
भस्म लगा रहता है। इस
* श्लोक के अनुसार त्रिपुण्ड
लगाते थे
त्रिपुण्ड मस्तके धारित्वा।

रुद्राक्ष का माला गेरुआ वस्त्र
कोपीन एक पटी वस्त्र एक
(चादर) उस वस्त्र के पहन
रहते थे। हाथ में कुमण्डलू
दण्ड लिये हुए रहते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुगल शासन के पश्चात्
भारत के नागरिक -
सब
एक होगये जिन्हों भारत में
मुस्लिम शासन में तीर्थ मन्दिर
तोड़े थे उन सब का जीर्णोद्धार
करा दिया। भारत में
अनेक छोटे-छोटे राजा हुए
उन राजा अप्सरा में से
हिन्दू एकता न रख सके
हिन्दू मन में उन
के आपस में
ही युद्ध होने लगा
शासन को
सम्हाल कर पुनः भारत प्रोद्धित
होगया अंग्रेजों ने भारत
का शासन सम्हाला अंग्रेजों
ने भारत के नागरिकों से कहा
तुम सब अपने-अपने धर्म
का पालन करो और हमें
देश, राज्य, पद दो अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जातियों के अनुसार करो। उसे और सभी हिन्दू त्योहार मनाओ, करो तथा फिर दी शिक्षा दो।

अंग्रेजी शासन के पश्चात् भारत के शासन को इस प्रकार का कानून बनाना। विशेष कर सनातन बौद्ध धर्म को आगे बढ़ाना और ब्राह्मण धर्म को बहुत मानना था।

यह बात सिद्ध होता है कि सन् पूर्व तक हिन्दू बुद्धिज्म बौद्ध सीक आदि जितने संप्रदाय है वह सब एक भेष भूषा में रहते थे और अंग्रेजों ने यह प्रथा भी चलाया, जैसे (इसी हास में) देखने उपर-उपर से गोरे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठ्यक्रम में होकर बहुत दोषपूर्ण
करार दिये।

अब हम भी शिवाजी
का पूरे तरीके से इतिहास
पाठों को प्रस्तुत करके
भारत से बाहर को -
को गये उन्हें
पहचाने। भारत के पहले
के राजा, मंत्री द्वारा
सम्मिलित गये
जाने वाले कार्यों में
आये मन्दिर, पहाड़
राजा और [illegible] कार्य
वास करने पूरने के लिये
सभी मकान बनाये और
राजाओं को अपनी घोड़े से
आदि के राज [illegible]
जो उन्हें [illegible]
दिखाने उन्हें कर भेजा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानीभवानी ।।

मैंने यहां में तपस्या करता था उस समय रविशंकर जोड़ जोड़े काशी महात्म तीर्थ धाम की एक ~~अंश~~ पुस्तक रख्खा देकर पढ़ने को दिया उसी को लेकर आये उस पुस्तक में रानी भवानी जी की वर्णन लिखा किया है रानी भवानी बंगाल काशी आई और काशी के प्रमुख यात्रा को यात्रा करते समय में काशी के मन्दिरों को मुसलमानों ने मन्दिरों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनिष्ट भ्रष्ट और
बहुत मंदिर तोड़ दिये
तोड़ा हुआ देख कर
बहुत दुःखी हुई तीन दिन
तक भोजन नहीं किये
मन्त्री मंत्री और शान्त मंत्री आये हुये
तीसरे दिन उनको रानी भवानी
के राज गुरु जी गये
अर्थात् कुल पुरोहित जी
बोले भोजन नहीं करने से शरीर नहीं रहेगा आप
गुरु जी में खड़े होकर
मैंने काशी के सभी मन्दिरों
आज्ञा को जीर्णोद्धार कराऊंगी
प्रतिज्ञा करो और संकल्प दो
राज गुरु जी के आज्ञा से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मणिकर्णिका घाट में

खड़े (कटे) कमर तक गड्ढे

जल में खड़े होकर एकहजार

मन्त्रोच्चारण घण्टे मणिदो

कार्णिकेश्वर द्वार कारीगरों

के हाथों का संकल्प हो

अच्छा से कारीगर मन्दिर

बनाने के लिये सम्मेलन कर

इन्जीनियर.

कारीगर- कर्मचारी आगये

कारीगर गये दिन दण्ड में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाटदिया गया ओंकारेश्वर खण्ड, विश्वनाथ खण्ड और केदारेश्वर खण्ड तीनों खण्डों में बांट दिया गया ओंकारेश्वर खण्ड के जीर्णोद्धार कराने वाले रामेश्वर चक्रवर्ती हुए। विश्वनाथ खण्ड कामिनि कुमार चट्टोपाध्याय हुआ। केदार खण्ड का मन्त्री राम सिंह पठे। थल सेना पति केउद्धे थे। तीनों खण्डों में मन्दिरों का जीर्णोद्धार प्रारंभ होगया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

→ आधार आधार

कोशी विद्वानों ने 18 उपनिषद पुराणों के आधार से मन्दिरों का जीर्णोद्धार प्रारम्भ हुआ। विद्वानों ने स्थानीय लोगों विश्व मन्दिरों को सुझाव दिये। मुख्य मन्दिरों के आसपास छोटे-छोटे मन्दिर तोड़ दिये अब छोटा बना या गये काशी मन्दिरों का सुझाव सुझाव हो सके (बहुत पानी प्रयुक्त करता है काशी में छोटे-छोटे मन्दिर बनो)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब क्षेत्र की दिशा
जीते

सामान

१ घ० -
२ से० -
३ फ़ -
४ हि० -
५ आ -
६ पु० -
७ राम -
८ गि० -
९ मा हि०

१० ला रू ~~स्वाहि~~
११ - स० ~~स्वामी~~
१२ - अ० —
१३ - म० -
१४ च०
१५ ग०
१६ ~~स्वाड~~
16 स्त्री०
१८ शु०
१९ रा०
20 ~~श्री०~~
21 स०
22 ~~ना० स्वामी~~

१ ~~चे०~~ मं०
२ — बु०
३ गु०
४ ल०

देवानी

दूधवा०
डा० -
औषा०
गुरुवी०
प० सू०
फू०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri